रामनरेश त्रिपाठी की राष्ट्रीय चेतना और 'पथिक'

(डॉ. सरिता)

हिन्दी कविता की राष्ट्रीय परम्परा में रमनरेश त्रिपाठी झा अपना वैशिष्टय है। ये द्विवेदी और छायथवबाद युग के प्रतिष्ठित कवि थे। इनकी प्रमुख रचनाओं का स्वर उदात्त देश-प्रेम और बलिदान की भावना रहा है। रूमकजीन परिरिथतियों का यथार्थ चित्रण कर उदार राष्ट्र-प्रम और आदर्श जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा ही इनके साहित्यिक जीवन की घुरी था। उन्होंने तत्कालीन राष्ट्रीय आन्दोलनों में सक्रिय भाग लिया, वे कई बार जल भी गये। देश के प्रति अगाछ प्रेम ही "प्थिक' काव्य में मुखरित हुआ है. पथिक काध्य में राष्ट्रीय चेतना के प्रसार को नुख्य उद्देश्य मानने के राथ-राथ अनेक अन्य ऐसे भी पक्ष हैं जिन्हे हम मूल राष्ट्रीय चेटना का पथिक कह सकते हैं। उदात्त मानप प्रेम, आदर्श यथार्थ का समन्वय, अहिंसा, सर्वात्मवाद, कर्मयोग की प्रेरणा की अभिव्यक्ति इनके काव्य की मुख्य विशेषता रही है। 'पथिक की मूल चेतना मे कर्म प्रधान है। देश की दुर्दशा से व्यधथित होकर उरः पर अंसू बहाने से राष्ट्र कीउन्नति नहीं हो सकती बल्कि उक्त्के लिए पुरूष'श और बलिदान की आवश्यकता है। 'पथिक' में यह्न भाद ही मुख्य रूप से दिखाई देतः हैं। देश में व्याप्त अन्याय और अनीति को समाप्त कर सुव्यवस्था स्थापित करने के लिए जनता का उसके अधिकारों को प्रति राचेत किया है।

स्वाधीनता की यह चेतना ही सौन्द्रय का प्रारम्भ है। देश के प्रति पूर्ण समर्पण ही स्वतन्त्रता की पहली रीढी है। एथिक की प्रेरणा रूपी वाणी से प्रभावित ही सभी रुप्ज कर्मचारी, सैनिक, निरंकुश शारुक के विरूद्ध हो जाते हैं और उसे देश से निकालने में सम्थ होते हैं- भारतीय संस्कृति सदैव वैराग्य की अपेक्षा कर्म को महत्व देती रही है। आधुनिक युग में भी स्वामी वेवेक नन्द, सुभाष, गाधी जैरो महान युरूषों ने कर्म योग का मन्त्र दिया और उसे अपने जीवन में ढालने का प्रयास किया है। 'पथिक काव्य में कर्म योग की यह प्रेरण" दिखाई देती है। जीटन के कर्तव्य मार्ग को छोडकर कल्पना के संसार में विवरण करनः वास्तव में पलायन है। अपन दायित्व बोध को पूरा करने के लिए कम के प्रति पूर्ण समर्यण का भाव ही मनुष्य का धर्म है। इसी तथ्य को त्रिपाठी जी ने अपने काव्य के माध्यम से प्रकट किया है। पिश्व के सभी चर-अचर अपने अपने कर्म में लगे हैं तब मनुष्य क्यों कर्म से मुँह नोड कर भागे ? पलायनवादी प्रवृति मनुष्य को कायर बनाती है। ईश्वर ने इस संसार की रचना कर्मक्षेत्र के रूप में की है; इस संसार रूपी कुरुक्षेत्र अ्थ्ति कर्मक्षेत्र में कर्तव्य का पालन करते रहना ही ननुष्य का सबसे बड़ा धर्म और दीरता है। मृत्यु तक कर्म करते रहना ही मनुष्य जीवन की अभिलाषा होनी चाहिए- काव्य राजतन्त्र पर प्रजातन्त्र की विलय का काव्य है। इसकी कथा एक ऐसे लोकनायक का घरेत्र प्रतुत करती है जो रज्तन्त्र के घडयन्त्रों से देश को मुक्ति दिलाने के लिए अनवरत संघर्ष करता है। पशिक गांघीदादी दर्शन छा आख्यान है। इसमें नायक के व्यक्तित्व तथः क्रियाकलापों में गांधी के सिद्धान्तों को देखा जा सकता है। वैक्टिक प्रेम और प्रकृति प्रम को देश-प्रेम में ढाल देने का संकल्प लेकर पथिक जब स्वदेश लौटता है तो निश्चय करता है कि पूरे देश मे घूम कर जन सामान्य की परिरिथिति से परिचित हुआ जाए। प्रथिक काव्य का नायक भी गांघी जी की तरह कोट प्रतलून त्याग कर रगत्विक जीवन प्यततीत करता है। गांधी के अध्ंिसक का गहरा प्रमाव काय्य में दिखाई देता है-

गांधी जी जातिगत भेदशय और छुआछूत के विरोधी थे। दे दीन हीन लोगो को गले लगाना परम धर्म

मानते थे। 'पथिक' काव्य का पथिक भी इसी को अपने जीवन का घ्येय मानता है- विकस की सुदिधायें, उन्नि के रुमान अवरुर सबको मिलने चाहियें। चाहे दे किसी जाति. डर्ग, लिंग ऊथवा प्रदेश का हो। सर्वोदिय भावना की उरिकल्टना का रूकार रूप पशिक में ''ष्टिगत होता है; परशिक काप्य का आरम्भ अदर्शमय कल्पना लोक से होता है जो बाद में यथ्ार्थ की ओर प्रदृत्त होता है। जीवन में कोरे आदर्श का कोई महत्थद नहीं जब तक वह यथार्थ रूप में क्रियान्वित न हो-

19वीं शताब्दी के आरम्भ में अनेक समाज सुधार और देशोत्थान के आन्दोलन चले। बहुत करू ध्यांठित निर्वार्थ भाव से सच्ची देश सेवा नें प्रवृत्त होते थे। अधिकतर जोग अपने स्वार्थ और झूठी वाह वाही लेने के लिए ही राजनीति के क्षेत्र में आते थे! पण्डित रामनरेश त्रिपाठी रवयं सार्वजनिक क्षेत्र में संक्रेय थे इसलिए उन्होंने ऐरो नेताओं को बहुत करीब से देखा और परखा था। उनके काव्य नें ऐसे लोगों की वारतविकता सामने अगयी है-

स्वतन्त्रता आन्दोलन की पृष्ठभूमिके रूप में लिखे गये इरा काव्य में समकालीन परिस्थितियों कः स्वाभाविक चित्रण हुआ है। साम्राययवादी शासन से दुखी जनता गरीबी और भूखमरी का सामगा कर रही थी, शिक्षा कः उद्देश्य कंवल रारकारी तन्त्र को मज्बूत बनना और लगन देना धा। ऊिरान अपनी उपज का लाग नहीं 36: याते थ। मजदूर वर्ग को पसीना बहा बहा कर भी पेट मर भोजन नहीं मिलता था। युवा वर्ग जीवन से निरश हो पलागयनवबादः बन रहा भा | पराधीन जनता विदेशी साम्राज्य की क्रूरता का शिकार हो रही थी ऐसे समय में गांधीवादी धिचारों से दुल्त इस काव्य ने समाज को दिशा दी। अठः: राष्ट्र चेतना एवं क्रान्ति के संवाहक के रूप में पशथ्चिक्त काव्य का अयना विशेष महत्व है। यह क्रान्ति एक वैचारिक क्रान्ति है जो कमंयोग अपना कर सर्वहित कारक विचारों को भृह्ल करने की पक्षपाती है। '